माध्यमिक विद्यालयों में भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों के 'कृत्य संतोष' व 'भूमिका प्रभावशीलता' का अध्ययन

आलोक शर्मा*

इस शोध अध्ययन में भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों की कार्य संतुष्टि व भूमिका प्रभावशीलता का अध्ययन कर, उनके मध्य संबंध को मापने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन में यह जानने का प्रयास भी किया गया है कि माध्यमिक स्तर पर भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों का 'कृत्य संतोष' व 'भूमिका प्रभावशीलता' कैसी है? क्या अध्यापकों के जेंडर (महिला या पुरुष होने), अनुभव (शाला अध्यापन के वर्ष), प्रबंधन के प्रकार (सरकारी व गैर-सरकारी) व भाषा अध्यापन का माध्यम (हिंदी या अंग्रेज़ी) का कृत्य संतोष व भूमिका प्रभावशीलता से कोई संबंध है तथा इन दोनों का आपस में भी कोई संबंध है या नहीं। इस अध्ययन में होशंगाबाद ज़िले में वर्ष 2016–17 में संचालित 50 सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालयों का चयन किया गया था। कार्य संतुष्टि मापने हेतु प्रमोद कुमार व मुत्था (1973) के कृत्य संतोष प्रश्नावली व भूमिका प्रभावशीलता मापने हेतु पारिक, यू. (1998) के रोल एफ़ीशिएंसी स्केल (भूमिका प्रभावशीलता मापनी) का उपयोग किया गया था। हिंदी व अंग्रेज़ी का अध्यापन करने वाले 100 अध्यापकों को सरकारी/गैर-सरकारी, पुरुष/महिला, अनुभव व आयु के आधार पर विभिन्न समूहों में बाँटा गया है। आँकड़ों का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन, t-मान व सह-संबंध गुणांक का उपयोग किया गया था। इस शोध अध्ययन में निष्कर्षस्वरूप पाया गया कि कार्य संतुष्टि व भूमिका प्रभावशीलता धनात्मक रूप से सह-संबंधित है अर्थात् अधिक संतुष्ट अध्यापकों की भूमिका प्रभावशीलता अधिक पाई गई।

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा की महत्वपूर्ण व सकारात्मक भूमिका होती है। आदिकाल से ही शिक्षा सभ्यता का आधार रही है। शिक्षा प्रक्रिया में, प्रकृतिवादियों और आदर्शवादियों के अनुसार क्रमशः विद्यार्थी एवं शिक्षक को महत्वपूर्ण माना गया है। शिक्षा प्रक्रिया के तीन महत्वपूर्ण अंग हैं— अध्यापक, विद्यार्थी, और पाठ्यक्रम। परंतु गहराई से विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि शिक्षक ही शिक्षा प्रक्रिया का प्रमुख आधार है, क्योंकि पाठ्यक्रम या पुस्तकें स्वयं सक्रिय नहीं होती हैं तथा विद्यार्थी अल्पविकसित अवस्था में होता है, परंतु अध्यापक चैतन्य अवस्था में होता है। एक शिक्षक से समाज को अनेक अपेक्षाएँ होती हैं। विद्यालयी जीवन और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के केंद्र में शिक्षक और विद्यार्थी होते हैं। इनके परस्पर संबंधों की परिणति विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास के रूप में होती है। यह

**प्रधानाचार्य*, आयुष्मती कॉलेज एजुकेशन, एन.एच.12, जाटखेरी, होशंगाबाद रोड, भोपाल, मध्य प्रदेश 462010

परस्पर संबंध तभी मज़बूत होते हैं जब शिक्षक और विद्यार्थी परस्पर अपनी ज़रूरतों के अनुसार कार्य योजना बनाएँ। शिक्षक का दायित्व केवल ज्ञान देना नहीं, अपितु विद्यार्थियों में विभिन्न जीवन कौशल का विकास करना भी है। ताकि वे विषम परिस्थितियों का धैर्य के साथ सामना कर सकें। सामान्यतः भाषा अध्ययन के माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों में अपनी बात कहने, दूसरे की बात सुनने, प्रश्न करने, तर्क करने इत्यादि कौशल का विकास करता है। जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य अपनी जन्मजात शक्तियों को विकसित करके अपने व्यवहार तथा विचारों में निरंतर परिवर्तन, परिमार्जन एवं परिवर्धन कर सकता है। शिक्षा प्रक्रिया में अध्यापक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। जिस समाज में अध्यापक का सम्मान होता है, वह समाज अधिक सभ्य व विकसित माना जाता है। शिक्षक, शिक्षा और समाज को जोड़ने की महत्वपूर्ण कड़ी है। अन्य लोग जहाँ वस्तुएँ एवं पदार्थ बनाते हैं, वहीं शिक्षक बच्चे की चेतना को अभीष्ट दिशा में मोड़कर उसे विकसित, सुदृढ़ एवं सुघड़ इनसान के रूप में विकसित करता है।

पूर्व प्राथमिक स्तर पर भाषा अध्यापन व अध्ययन

इस स्तर पर शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि मातृभाषा या बोलचाल की भाषा में किए गए अध्यापन को बच्चा शीघ्र ग्रहण करता है। साधारणतः एक शिक्षक बच्चे में जानने की शक्ति, उसके साथ कार्य करने का सामर्थ्य, शिक्षण योग्यता व सहकारिता आदि गुणों का विकास करता है अर्थात् शिक्षण कार्य वह व्यक्ति कर सकता है जिसमें बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक एवं सांवेगिक आदि गुण मौजूद हों।

समाज में माता को प्रथम शिक्षक का स्थान प्राप्त है, क्योंकि बच्चा सर्वप्रथम अपनी माँ से ही शिक्षा ग्रहण करता है। ज्यों-ज्यों उसका विकास होता है, त्यों-त्यों उसकी शिक्षा का प्रबंध अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। भारतीय शालाओं में औपचारिक शिक्षा के मुख्यत: तीन स्तर माने जाते हैं— प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर, उच्चतर स्तर। इन तीनों का अपना विशेष महत्व है। जहाँ प्राथमिक स्तर शिक्षा का मूल है, वहीं माध्यमिक स्तर तना एवं उच्चतर स्तर उसका विकासात्मक पक्ष है। सामान्यतः यह कहा जाता है कि व्यक्ति अपने कार्य में तब तक सफल नहीं हो सकता, जब तक की वह किसी कार्य को पूर्ण मनोयोग से न करे।

भाषा अध्यापन करने वाले शिक्षक की अपने कार्य के प्रति संतुष्टि अपनी भूमिका का सही एवं सकारात्मक रूप से निर्वहन करना अत्यावश्यक है। सामान्यतः कृत्य संतोष की अवधारणा पश्चिम की देन है; आधुनिक भौतिकतावादी युग में व्यवसाय से मिलने वाले संतोष को पश्चिम में जीवन का अभीष्ट लक्ष्य माना गया है।

'कृत्य संतोष' क्या है? हिंदी शब्दकोश अथवा शैक्षिक व समाजशास्त्रीय ग्रंथों में इसकी सटीक और निश्चित परिभाषा नहीं मिलती है। वाक्य विन्यास के आधार पर कृत्य संतोष दो शब्दों से मिलकर बना है; प्रथम, कृत्य या कार्य और द्वितीय, संतुष्टि। कार्य का अर्थ है— अपनाया गया कोई व्यवसाय जिसके लिए कार्य किया जाता है और संतुष्टि का अर्थ होता है— संतोष अथवा प्रसन्नता। शाब्दिक अर्थ में अपने कार्य अथवा पेशे से प्राप्त होने वाले आनंद और संतोष को 'कृत्य संतोष' कहा जा सकता है।

व्यवसाय के किन पक्षों अथवा रीतियों से संतोष प्राप्त होता है, यह मनोविज्ञान का विषय है। एक व्यक्ति को कार्य की अच्छी दशाएँ, सामाजिक सम्मान और प्रतिष्ठा, उचित वेतन, मनोवांछित स्थान पर नियुक्ति होने के बावजूद भी संतोष प्राप्त नहीं होता, वहीं समान योग्यता रखने वाले किसी दूसरे व्यक्ति को कम सुविधाजनक अवस्थाओं व कम वेतन पर भी संतोष प्राप्त हो जाता है। कहने का अभिप्राय यह है कि कृत्य संतोष एक संतुष्टि अथवा आंतरिक अनुभूति है। इसका संबंध मनुष्य के हृदय से होता है। संतुष्टि अथवा संतोष की भावना के मूल में भी कुछ प्रवृत्तिमूलक और भौतिक परिस्थितियाँ होती हैं। व्यवसाय से मिलने वाले संतोष की पहली आवश्यकता प्रवृत्ति जन्य होती है अर्थात् अपने स्वभाव, प्रवृत्ति, रुचि और इच्छाओं के अनुकूल कार्य मिलना संतुष्टि की पहली शर्त है। कृत्य संतोष का दूसरा आधार भौतिकता है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कार्य में संतुष्टि मुख्यतः दो आधारों पर प्राप्त हो सकती है। प्रथम— व्यक्ति को उसकी प्रकृति अथवा स्वभाव व रुचि के अनुसार कार्य मिला हो तथा दूसरा— अपने व्यवसाय से कम से कम इतनी आर्थिक सुविधाएँ व वेतन मिलता हो जो उस समाज में जीवनयापन के लिए आवश्यक है। सामान्यतः कार्य संतोष को, जेंडर, आयु, अनुभव, कार्य के घण्टे, समय सारणी, बुद्धि, आकांक्षा का स्तर, क्षेत्र, शिक्षा, व्यक्तित्व व व्यक्तिगत आवश्यकताएँ तथा मूल्य एवं आदर्श प्रभावित करते हैं। भाषा अध्यापन करने वाले शिक्षकों के संबंध में, इनमें से भाषा का माध्यम व उसका अध्यापन भी सम्मिलित किया जा सकता है। एक अध्यापक अपने शिक्षण को तभी प्रभावी बनाने में सक्षम होगा जब उसकी कही बात का प्रभाव विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर में या व्यवहार में परिवर्तन करने में सक्षम हो। इस रूप में मातृभाषा में शिक्षण व संप्रेषण का माध्यम बोलचाल की भाषा या मातृभाषा हो तो शिक्षक का कृत्य संतोष उच्च स्तर का हो सकता है।

इसी प्रकार 'भूमिका प्रभावशीलता' भी दो शब्दों, भूमिका व प्रभावशीलता से मिलकर बना है। समेकित रूप में 'भूमिका प्रभावशीलता' अपने कार्य को प्रभावशाली ढंग से निर्वहन करने से संबंधित है। एक शिक्षक की भूमिका संपूर्ण शैक्षिक पर्यावरण में अत्यंत गरिमामय व प्रभावपूर्ण होती है। एक शिक्षक जब कम समय, कम सामग्री, कम ऊर्जा, कम प्रयास और कम पैसे से वांछित परिणाम (विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि में परिवर्तन) लाने में सक्षम होता है, तब उसकी भूमिका को प्रभावपूर्ण माना जा सकता है। शिक्षा व्यवस्था में भूमिका से तात्पर्य शिक्षक द्वारा किए जाने वाले दैनिक शैक्षणिक क्रियाकलापों से है, परंतु साथ-साथ शिक्षक के सामाजिक पक्ष को भी दृष्टिगत रखना चाहिए। शिक्षक का अपना व्यक्तित्व व व्यवहार समाज का मार्गदर्शन करने वाला होना चाहिए। कार्य के अंतर्गत आने वाली शिक्षक की भूमिका और विशेष प्रकार की कार्यदशाओं में तादात्म्य स्थापित हो जाने पर शिक्षक अधिक प्रभावशालीपूर्ण, कुशलतापूर्वक एवं रुचि के साथ कार्य करते हुए आनंद का अनुभव करता है। भूमिका निर्वहन के अंतर्गत कुशलतापूर्वक कार्य संपादन हेतु प्रशिक्षण की आवश्यकता व कार्य विशेष में अपेक्षित कौशल का विकास नितांत आवश्यक है। अपेक्षित कौशल प्राप्त व्यक्ति का आत्मबल उच्च होता है, क्योंकि उसे यह एहसास रहता है कि वह कार्य को बिना किसी बाधा के पूर्ण कर लेगा। भूमिका निर्वहन

में जिन लोगों के बीच में रहकर कार्य किया जाता है, उनके व्यवहार, आपसी संबंध, विनोदप्रियता, सहयोग की भावना आदि भी भूमिका को प्रभावित करते हैं। यदि सहकर्मियों का व्यवहार सकारात्मक है तो शिक्षक अच्छा महसूस करता है। सामान्यतः भूमिका प्रभावशीलता के अंतर्गत भूमिका का निर्माण, भूमिका का केंद्रण व भूमिका का अन्य गतिविधियों से संबंध महत्वपूर्ण घटक हैं।

संक्षेप में, 'भूमिका प्रभावशीलता' को किसी भूमिका के प्रभावी रूपांतरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। एक शिक्षक चूँकि शिक्षा व्यवस्था की धुरी होता है; अतः उसका अपनी भूमिका निर्वहन के प्रति सकारात्मक रवैया होना अत्यावश्यक है। भूमिका प्रभावशीलता को शिक्षक के अपने सहकर्मियों के साथ संबंध, संस्था की स्थिति, आयु, अनुभव, जेंडर, बुद्धि व अध्यापन का माध्यम प्रभावित करते हैं।

विभिन्न स्तरों पर शिक्षकों के 'कृत्य संतोष' पर प्रभाव डालने वाले कारकों का अध्ययन किया गया है। कौर (1983), श्रीवास्तव (1985), पटनायक और पंडा (1982), खातून और हसन (2000), लाहिरी, एस. और सक्सेना (2003), अलका और अस्थाना (2004), एवं सिंह (2007), ने अपने अध्ययनों में 'कृत्य संतोष' पर जेंडर, आयु, शिक्षण स्तर व शिक्षण अनुभव और अन्य व्यक्तिगत चरों के पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया है। रामा (2000) ने शिक्षकों के कृत्य संतोष व जीवन स्तर के मध्य महत्वपूर्ण संबंध पाया है। गुप्ता और जैन (2003) ने यह पाया है कि वेतन, सुरक्षा, भौतिक स्थिति, प्रमोशन आदि 'कृत्य संतोष' को प्रभावित करते हैं। इसी प्रकार, श्रीदेवी (2012) ने शिक्षकों के जेंडर एवं शिक्षण अनुभव का कृत्य संतोष पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया। गुप्ता, पसरीजा और बंसल (2012) ने यह पाया कि कृत्य संतोष में महिला शिक्षक पुरुष शिक्षक की तुलना में अधिक संतुष्ट हैं। भट्ट (1997) ने कृत्य संतोष को कृत्य भागीदारी से सार्थक रूप से सहसंबंधित पाया है। पांडे (2016) ने सरकारी व गैर-सरकारी शिक्षकों के कृत्य संतोष का अध्ययन किया और यह पाया कि कृत्य संतोष पर सैलरी व मैनेजमेंट का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

भूमिका प्रभावशीलता पर विभिन्न कारकों एवं कृत्य संतोष में संबंध स्थापित करने हेतु किए गए अध्ययन कम हैं। सिन्हा (1980) ने शिक्षित व अशिक्षित शिक्षकों की भूमिका प्रभावशीलता पर विषय, आयु, जेंडर, शैक्षणिक योग्यता, अनुभव का अध्ययन किया। सिंह और मोहंती (1996) ने भूमिका प्रभावशीलता को भूमिका की चिंता व भूमिका स्तर पर अध्ययन किया और उनके मध्य सार्थक संबंध पाया। पाथेय और चौधरी (2000) ने भूमिका प्रभावशीलता के घटकों के मध्य संबंध स्थापित करने हेतु अध्ययन किया। सावले (2000) ने प्राथमिक विद्यालयों की भूमिका प्रभावशीलता का अध्ययन किया और आयु व प्रशिक्षण योग्यता के आधार पर सार्थक अंतर दर्शाया। शर्मा, आलोक (2001) ने जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षकों की भूमिका प्रभावशीलता व संगठनात्मक स्वास्थ्य का अध्ययन किया और जेंडर व आयु के आधार पर शिक्षकों की भूमिका प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया। पटनायक और शर्मा (2003) ने भी अपने अध्ययन में आयु व जेंडर व आयु के आधार पर भूमिका प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया।

शोध का औचित्य

किसी भी विद्यालय का स्वस्थ शैक्षिक वातावरण विद्यालय प्रबंधन, शिक्षक और विद्यार्थियों पर निर्भर करता है। प्रबंधन के अंतर्गत शासकीय, अशासकीय व अर्धसरकारी स्तर पर संचालित संस्थाएँ आती हैं जो कि अपने-अपने प्रशासन व सुविधाओं के दृष्टिकोण से पृथक हो सकती हैं। विद्यार्थियों का शैक्षिक उपलब्धि स्तर भी विद्यालय प्रबंधन, विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिवेश से प्रभावित होता है। किंतु इन दोनों से भी अत्यंत महत्वपूर्ण व प्रभावी स्थान शिक्षक का है जिसके सामने अन्य सभी सुविधाएँ, आकांक्षाएँ व प्रशासनिक भूमिका गौण व लगभग निष्प्रभावी हो जाती हैं। एक शिक्षक संपूर्ण शिक्षण-प्रक्रिया की धुरी होता है, जिसके व्यक्तित्व, ज्ञान व व्यवहार का प्रभाव न केवल विद्यार्थियों, अपितु समाज, प्रदेश, राष्ट्र व वैश्विक स्तर पर भी परिलक्षित होता है। अतएव एक शिक्षक का शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ एवं बौद्धिक दृष्टिकोण से सबल होना अत्यावश्यक है।

शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य को न केवल घर परिवार व समाज, अपितु विद्यालय का वातावरण भी प्रभावित करता है। व्यावसायिक दृष्टिकोण से भी एक शिक्षक का अपने कृत्य (जॉब) से संतुष्ट (सेटिस्फ़ाइड) होना चाहिए। साथ ही, शिक्षक विद्यालय में अपनी भूमिका (रोल) का प्रभावी (इफ़ेक्टिव) ढंग से निर्वहन करते हुए सुदृढ़ राष्ट्र के निर्माण में सहायक होना चाहिए। वैसे शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर इस बात की अपेक्षा की जाती है कि शिक्षक अपने व्यवसाय के प्रति पूर्ण लगन व निष्ठा से कार्य करें, चूँकि माध्यमिक स्तर पर शिक्षक की भूमिका शिक्षक के साथ-साथ निर्देशनकर्ता व सलाहकार की भी हो जाती है। अत: माध्यमिक स्तर पर अध्यापकों का कृत्य संतोष व अपनी भूमिका का प्रभावी निष्पादन महत्वपूर्ण हो जाता है। भाषा (लैंग्वेज) संचार का एक महत्वपूर्ण साधन है; जिसके माध्यम से अध्यापक तथ्यों, सूचनाओं व जानकारी का स्थानांतरण विद्यार्थियों में करता है। भाषा पर अध्यापक का आधिपत्य एवं पूर्ण पकड़ होनी आवश्यक है ताकि वह अपने विचारों के साथ विद्यार्थी के विचार व पाठ्यक्रम में सामंजस्य स्थापित कर विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन में सहायक हो सके। अत: भाषा अध्यापन करने वाले शिक्षकों को कृत्य संतोष की दृष्टि से पूर्णत: संतुष्ट होना चाहिए ताकि वह अपनी भूमिका के साथ न्याय कर सकें और विद्यालय में प्रभावी ढंग से अपने कार्य को पूर्णत: प्रदान करने में सक्षम हों।

'कृत्य संतोष' व 'भूमिका प्रभावशीलता' दोनों शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं, अत: प्रस्तुत शोध में इनका अध्ययन किया गया है। इस शोध पत्र में उठाई गई समस्या शिक्षक, पाठ्यक्रम व विद्यार्थियों से संबंधित है। कार्य संतुष्टि व भूमिका प्रभावशीलता एक-दूसरे के पूरक हैं या एक ही सिक्के के दो पहलू कहे जा सकते हैं। जब अध्यापक अपने कार्य से संतुष्ट अथवा प्रसन्न होता है, तब वह अपनी भूमिका का निर्वहन प्रभावशाली तरीके से करने में सक्षम होता है। दूसरी ओर यह कहा जा सकता है कि एक शिक्षक अपने कार्य को प्रभावशाली तरीके से तभी पूरा कर सकता है, जब वह अपने कार्य में संतुष्टि प्राप्त करता हो। इन सब बातों को दृष्टिगत रखते हुए यह शोध कार्य किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे —

- भाषा अध्ययन करने वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि व भूमिका प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
- भाषा अध्ययन करने वाले शिक्षकों के जेंडर (महिला व पुरुष), प्रबंधन (सरकारी व गैर-सरकारी), अनुभव व भाषा अध्यापन (हिंदी/अंग्रेज़ी) का उनके कृत्य संतोष व भूमिका प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।
- 'कृत्य संतोष' एवं 'भूमिका प्रभावशीलता' के मध्य संबंध की जाँच करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की निम्न शून्य परिकल्पनाएँ थीं—

- भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों के 'कृत्य संतोष' व 'भूमिका प्रभावशीलता' में जेंडर के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों के 'कृत्य संतोष' व 'भूमिका प्रभावशीलता' में प्रबंधन के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों के 'कृत्य संतोष' व 'भूमिका प्रभावशीलता' में अनुभव के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों के 'कृत्य संतोष' व 'भूमिका प्रभावशीलता' में भाषा अध्यापन के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों के 'कृत्य संतोष' व 'भूमिका प्रभावशीलता' में कोई सार्थक सह-संबंध नहीं है।

न्यादर्श एवं उपकरण

इस अध्ययन हेतु होशंगाबाद ज़िले में वर्ष 2016–17 में संचालित 25 सरकारी एवं 25 गैर-सरकारी (कुल 50 विद्यालयों) के भाषा अध्यापन करने वाले 100 शिक्षकों से कृत्य संतोष प्रश्नावली व भूमिका प्रभावशीलता से संबंधित (भूमिका सामर्थ्य मापनी) का उपयोग कर, आँकड़ों का संग्रहण किया गया। 'कृत्य संतोष' हेतु प्रमोद कुमार व मुथ्था (1973) एवं 'भूमिका प्रभावशीलता' मापने हेतु पारिक, यू. (1998) की भूमिका सामर्थ्य मापनी का उपयोग किया गया। भूमिका प्रभावशीलता मापनी का हिंदी अनुवाद सावले (2000) ने किया था। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, t-मान एवं सह-संबंध गुणांक का उपयोग किया गया।

कृत्य संतोष प्रश्नावली में कुल 29 प्रश्न हैं। इस मापनी का विश्वसनीय गुणांक 0.75 है, सभी 29 प्रश्नों को धनात्मक प्रतिक्रिया हेतु एक अंक प्रदान किया गया है एवं ऋणात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया हेतु 0 अंक प्रदान किया गया है। इसी प्रकार भूमिका सामर्थ्य मापनी में त्रिस्तरीय रेटिंग स्केल का उपयोग किया गया व (+2, +1, और –1 पूर्णांक) पूर्णतः सहमत, सहमत एवं असहमत प्रतिक्रिया हेतु प्रदान किए गए। प्रश्नों के उत्तर न देने पर 'शून्य अंक' प्रदान किया गया।

परिणाम तथा विवेचन

प्रथम शून्य परिकल्पना— भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों के 'कृत्य संतोष' व 'भूमिका प्रभावशीलता' में जेंडर के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है

भाषा अध्यापन करने वाले 100 शिक्षकों का कृत्य संतोष व भूमिका प्रभावशीलता हेतु जेंडर के आधार पर प्राप्त आँकड़ों के आधार पर सांख्यिकी विश्लेषण किया गया, जिसे तालिका 1 में दर्शाया गया है।

तालिका 1 — जेंडर के आधार पर कृत्य संतोष व भूमिका प्रभावशीलता से प्राप्त आँकड़ों के मध्यमान, मानक विचलन व t-मान की गणना

चर	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	N	df	t-मान
कृत्य संतोष	पुरुष	23.77	7.28	48	98	1.07
	महिला	25.78	6.07	52		
भूमिका प्रभावशीलता	पुरुष	24.90	6.44	48	98	1.00
	महिला	24.41	7.45	52		

तालिका 1 से यह स्पष्ट है कि कृत्य संतोष में महिला शिक्षकों का मध्यमान (25.78) पुरुष शिक्षकों के मध्यमान (23.77) की तुलना में अधिक है। परंतु t-मान का मूल्य 1.07 (df 98) 0.01 पर 2.62 तालिका मूल्य से कम है। अतः दोनों समूहों में सांख्यिकी रूप से कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतएव शून्य परिकल्पना कि भाषा अध्यापन करने वाले महिला व पुरुष अध्यापकों में जेंडर के आधार पर कृत्य संतोष में कोई सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकार की जाती है। मध्यमान के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों का अच्छा कृत्य संतोष उनकी रुचि के अनुसार कार्य का चयन करने व भारतीय सामाजिक परिस्थितियों के कारण है। हमारे समाज में महिलाओं को प्रथम शिक्षक का दर्जा प्राप्त है और जब वह शिक्षण व्यवसाय में आती हैं, तो उनके अपने घर में शिक्षक के रूप में किया गया कार्य मदद करता है, जिसके प्रभाव से उनका प्रदर्शन निखरता है और वह पुरुष शिक्षकों की तुलना में अधिक कृत्य संतोषी होती हैं।

साथ ही, तालिका 1 से यह प्रदर्शित होता है कि भूमिका प्रभावशीलता हेतु t-मान 1.00 है जो कि 0.01 स्तर पर तालिका मान 2.62 (df 98) से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है एवं पुरुष व महिला अध्यापकों की भूमिका प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत की जाती है। जेंडर के आधार पर महिला एवं पुरुष अध्यापकों में भूमिका प्रभावशीलता में अंतर का न होना एक सकारात्मक सूचना देता है कि हमारे समाज में महिला व पुरुषों में कार्य के आधार पर भेद नहीं किया जाता एवं उन्हें समुचित समान अवसर प्रदान किए जाते हैं। महिलाएँ, पुरुषों की तुलना में अधिक धैर्यवान होती हैं व उनके शैक्षणिक गुण पुरुषों की तुलना में अधिक होते हैं। अतः उनकी प्रभावशीलता अपने साथी पुरुष अध्यापकों की तुलना में अधिक होती है। प्रबंधन द्वारा भी महिला व पुरुषों को समान यथोचित अवसर प्रदान किए जाते हैं, समान सुविधाएँ व समान शैक्षणिक वातावरण प्रदान किए जाते हैं; इस कारण इनकी भूमिका प्रभावशीलता में कोई अंतर नहीं है।

द्वितीय शून्य परिकल्पना—भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों के 'कृत्य संतोष' व 'भूमिका प्रभावशीलता' में प्रबंधन के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है

भाषा अध्यापन करने वाले 100 शिक्षकों का कृत्य संतोष व भूमिका प्रभावशीलता हेतु प्राप्त अंकों का प्रबंधन के आधार पर प्राप्त सांख्यिकी विश्लेषण किया गया, जो तालिका 2 में दिए गए हैं।

तालिका 2— प्रबंधन के आधार पर कृत्य संतोष व भूमिका प्रभावशीलता से प्राप्त आँकड़ों के मध्यमान, मानक विचलन व t-मान की गणना

चर	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	N	df	t-मान
कृत्य संतोष	सरकारी	24.32	4.58	47	98	0.162
	गैर-सरकारी	23.35	4.51	53		
भूमिका प्रभावशीलता	सरकारी	23.52	7.04	47	98	2.01
	गैर-सरकारी	28.27	7.47	53		

तालिका 2 से यह स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों का कृत्य संतोष (मध्यमान 24.32), गैर-सरकारी विद्यालय के शिक्षकों (मध्यमान 23.35) की तुलना में अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि सरकारी विद्यालय के शिक्षक गैर-सरकारी विद्यालय के शिक्षकों की तुलना में अधिक कृत्य संतोषी हैं। लेकिन सांख्यिकी दृष्टिकोण से t-मान 0.162 है। जो कि तालिका मान 2.62 (0.01) से कम है। अतः शून्य परिकल्पना कि सरकारी विद्यालय व गैर-सरकारी विद्यालय के भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों के कृत्य संतोष में कोई सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत की जाती है। सामान्यतः समान पाठ्यक्रम, शिक्षण की समान अवधि व एकसमान शैक्षणिक परिस्थितियों के कारण यह अंतर नहीं है, किंतु सरकारी विद्यालय के शिक्षकों का कृत्य संतोषी होना उनके वेतनमान व नौकरी की अधिक लचीली व संतोषजनक परिस्थितियों के कारण है। यह देखा गया है कि विद्यालय में कार्य की अधिकता व कम वेतनमान के कारण गैर-सरकारी विद्यालयों के शिक्षक कम कृत्य संतोषी होते हैं।

तालिका 2 से यह भी स्पष्ट है कि भूमिका प्रभावशीलता हेतु t-मान 2.01 है जो कि 0.05 स्तर पर तालिका मान 1.98 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है एवं शून्य परिकल्पना सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय के भाषा अध्यापन करने वाले शिक्षकों की भूमिका प्रभावशीलता में कोई अंतर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है। यह स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की भूमिका प्रभावशीलता का मध्यमान 23.52, गैर-सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की भूमिका प्रभावशीलता के मध्यमान 28.27 की तुलना में कम है। अतः कहा जा सकता है कि गैर-सरकारी विद्यालय के अध्यापक अधिक प्रभावी ढंग से अपना कार्य संपन्न करते हैं। अधिक या प्रभावी भूमिका प्रभावशीलता का कारण गैर-सरकारी विद्यालयों में अनुशासन व शैक्षणिक स्तर का उच्च होना है। गैर-सरकारी विद्यालय के शिक्षक अपने व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं, कठिन परिश्रम व प्रभावी कार्य योजना अनुपालन उन्हें अधिक प्रभावशाली बनाते हैं। ईमानदारी, लगन, अनुशासन, विनम्रता व विद्यालय का सकारात्मक वातावरण प्रभावी कार्यशीलता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

तृतीय शून्य परिकल्पना— भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों के 'कृत्य संतोष' व 'भूमिका प्रभावशीलता' में अनुभव के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है

भाषा अध्यापन करने वाले 100 शिक्षकों का अनुभव के आधार पर 10 वर्ष से कम व 10 वर्ष से अधिक

तालिका 3— अनुभव के आधार पर कृत्य संतोष व भूमिका प्रभावशीलता से प्राप्त आँकड़ों के मध्यमान, मानक विचलन व t-मान की गणना

चर	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	N	df	t-मान
कृत्य संतोष	10 वर्ष से कम	23.52	7.04	41	98	0.020
	10 वर्ष से अधिक	26.77	7.35	59		
भूमिका प्रभावशीलता	10 वर्ष से कम	23.91	4.81	41	98	0.67
	10 वर्ष से अधिक	28.62	5.62	59		

अनुभव के आधार पर दो वर्गों में विभाजित किया गया एवं उनके कृत्य संतोष व भूमिका प्रभावशीलता हेतु प्राप्त अंकों का अनुभव के आधार पर प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकी विश्लेषण किया गया है, जिसे तालिका 3 में दर्शाया गया है।

तालिका 3 के अनुसार 10 वर्ष से कम अनुभव वाले शिक्षकों का कृत्य संतोष का मध्यमान 23.52, 10 वर्ष से अधिक अनुभवी शिक्षकों के मध्यमान की तुलना में कम है। अतः मध्यमान के आधार पर कहा जा सकता है कि अधिक अनुभवी शिक्षक, कम अनुभवी शिक्षकों की तुलना में अधिक कृत्य संतोषी हैं। कम अनुभवी शिक्षकों के कम कृत्य संतोष का कारण वर्तमान शैक्षणिक प्रशासन से सामंजस्य स्थापित न कर पाना, कार्य की अधिकता, कम वेतनमान व अन्य प्रकार की अशैक्षणिक गतिविधियों में संलग्नता प्रमुख है। लेकिन सांख्यिकी दृष्टिकोण से t-मान 0.020 है जो कि 0.01 सार्थक स्तर पर तालिका मान 2.62 से बहुत कम है। अतः शून्य परिकल्पना कि अनुभव के आधार पर अध्यापन करने वाले शिक्षकों के कृत्य संतोष में कोई सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत की जाती है। अनुभव का कृत्य संतोष को प्रभावित न करना एक महत्वपूर्ण कारक है। सामान्यतः समान पाठ्यक्रम, विद्यार्थियों का समान अंतर व समान शैक्षणिक परिस्थितियाँ इसके लिए उत्तरदायी हैं।

तालिका 3 से यह भी स्पष्ट है कि भूमिका प्रभावशीलता हेतु अधिक अनुभवी शिक्षकों का मध्यमान 28.62, कम अनुभव शिक्षकों के मध्यमान 23.91 की तुलना में अधिक है। अतः यह कहा जा सकता है कि अधिक अनुभवी शिक्षक अधिक सक्रियता के साथ प्रभावी रूप से अपने कार्य पूर्ण करते हैं। अनुभवी होने के कारण विद्यार्थियों के मानसिक स्तर से सामंजस्य स्थापित करने में, प्रबंधन के साथ चलने में व पाठ्यक्रम और प्रशासनिक गतिविधियों से तालमेल स्थापित होने के कारण शिक्षक अधिक प्रभावशीलता के साथ अपनी भूमिका का निर्वहन करने में सक्षम हैं। परंतु सांख्यिकी दृष्टिकोण से अनुभव के आधार पर शिक्षकों की भूमिका प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। तालिका 3 से स्पष्ट है कि t-मान 0.61, तालिका मान 2.62 (0.01 स्तर) से अत्यधिक कम है; अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है एवं अनुभव के आधार पर भूमिका प्रभावशीलता में कोई अंतर प्रदर्शित नहीं होता है। संभवतः सभी विद्यालयों में समान वेतनमान, समान उत्साहवर्धन की प्रक्रिया होती है। अतः कम अनुभवी शिक्षक भी अधिक

अनुभवी शिक्षक के समान भूमिका प्रभावशीलता का प्रदर्शन करते हैं।

चतुर्थ शून्य परिकल्पना— भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों के 'कृत्य संतोष' व 'भूमिका प्रभावशीलता' में भाषा अध्यापन (हिंदी एवं अंग्रेज़ी) के आधार पर कोई सार्थक अंतर नहीं है

हिंदी व अंग्रेज़ी भाषा का अध्यापन करने वाले शिक्षकों के कृत्य संतोष व भूमिका प्रभावशीलता हेतु प्राप्त आँकड़ों के आधार पर सांख्यिकी विश्लेषण किया गया है, जिसे तालिका 4 में दर्शाया गया है।

तालिका 4 से स्पष्ट है कि हिंदी शिक्षण करने वाले शिक्षकों का मध्यमान 24.32, अंग्रेज़ी अध्यापन करने वाले शिक्षकों के मध्यमान 22.35 की तुलना में अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि मातृभाषा में शिक्षण कार्य करने में अध्यापक अपनी बातों का प्रभावी रूप से संप्रेषण करने में सक्षम होते हैं। विद्यार्थियों की शिक्षण में सहभागिता बढ़ती है जिससे उनके साथ पाठ्यक्रम व शिक्षण का सामंजस्य स्थापित करने में आसानी होती है। अतः अंग्रेज़ी पढ़ाने वाले शिक्षकों की तुलना में, हिंदी शिक्षण करने वाले शिक्षक अधिक कृत्य संतोषी होते हैं। अंग्रेज़ी विषय का अध्यापन करने वाले शिक्षक स्वयं को विशिष्ट वर्ग का समझने लगते हैं जिससे नौकरी की परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित करने में असुविधा होती है और कृत्य संतोष कम हो जाता है। कार्य के प्रति रुचि, उत्साह, आशाजनक परिणाम, विद्यालय का वातावरण, विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति सहित अन्य महत्वपूर्ण कारक हैं जो हिंदी शिक्षकों के कृत्य संतोष को बढ़ाते हैं।

किंतु सांख्यिकी रूप से t-मान 0.62 तालिका मान 1.98 व 2.62 से अत्यंत कम है; अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है और यह कथन कि हिंदी अध्यापन करने वाले शिक्षक अंग्रेज़ी अध्यापन करने वाले शिक्षकों के कृत्य संतोष में कोई सार्थक अंतर नहीं है, सत्य है।

तालिका 4 से स्पष्ट होता है कि भूमिका प्रभावशीलता हेतु t-मान 0.260 है जो तालिका मान 1.98 (0.05 स्तर) व 2.62 (0.01 स्तर) से बहुत कम है। अतः परिकल्पना कि हिंदी शिक्षक व अंग्रेज़ी शिक्षक की भूमिका प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत होती है और यह कहा जा सकता है कि अध्यापन विषय का शिक्षकों की भूमिका प्रभावशीलता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 4— भाषा अध्यापन के आधार पर कृत्य संतोष व भूमिका प्रभावशीलता से प्राप्त आँकड़ों के मध्यमान, मानक विचलन व t-मान की गणना

चर	समूह	मध्यमान	मानक विचलन	N	df	t-मान
कृत्य संतोष	हिंदी	24.32	5.38	42	98	0.162
	अंग्रेज़ी	22.35	5.38	58		
भूमिका प्रभावशीलता	हिंदी	27.32	6.32	42	98	0.260
	अंग्रेज़ी	28.42	6.32	58		

किंतु सांख्यिकी रूप से t-मान 0.162 तालिका मान 2.62 (0.01 स्तर) से अत्यंत कम है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है और यह कथन कि हिंदी अध्यापन करने वाले शिक्षक अंग्रेज़ी अध्यापन करने वाले शिक्षकों के कृत्य संतोष में कोई सार्थक अंतर नहीं है, सत्य है।

तालिका 4 से स्पष्ट होता है कि भूमिका प्रभावशीलता हेतु t-मान 0.260 है जो तालिका मान 2.262 (0.01 स्तर) से बहुत कम है। अतः शून्य परिकल्पना कि हिंदी व अंग्रेज़ी शिक्षक की भूमिका प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है, स्वीकृत की जाती है और यह कहा जा सकता है कि अध्यापन विषय का शिक्षकों की भूमिका प्रभावशीलता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

पंचम शून्य परिकल्पना— भाषा अध्यापन करने वाले अध्यापकों के कृत्य संतोष व 'भूमिका प्रभावशीलता' में कोई सार्थक सह-संबंध नहीं है इस शून्य परिकल्पना के सत्यापन हेतु इनके मध्य सह-संबंध गुणांक की गणना की गई। कृत्य संतोष व भूमिका प्रभावशीलता के मध्य सह-संबंध गुणांक तालिका 5 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 5 — कृत्य संतोष एवं भूमिका प्रभावशीलता के मध्य सह-संबंध गुणांक की गणना

चर	N	df	r
कृत्य संतोष एवं भूमिका प्रभावशीलता	100	99	0.21

तालिका 5 में सह-संबंध गुणांक का मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। कृत्य संतोष व भूमिका प्रभावशीलता में सार्थक धनात्मक सह-संबंध है; अतः कहा जा सकता है कि भूमिका प्रभावशीलता व कृत्य संतोष एक-दूसरे के पूरक हैं।

भूमिका प्रभावशीलता कार्य की योग्यता का निर्धारण करता है, जबकि कृत्य संतोष एक भावनात्मक तथ्य है। तालिका 5 से यह सिद्ध होता है कि शिक्षक अपनी भूमिका प्रभावी रूप से निभाता है तो उसे कार्य में संतुष्टि प्राप्त होती है और यह कहा जा सकता है कि पूर्ण कार्य संतुष्ट शिक्षक अपनी भूमिका को प्रभावी रूप से निर्वहन करने में सक्षम होता है। भाषा अध्यापन करने वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि व भूमिका प्रभावशीलता संपूर्ण शैक्षणिक परिदृश्य को प्रभावित करती है, क्योंकि भाषा संप्रेषण का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। भाषा अध्यापन करने वाले शिक्षकों का उचित वेतन, प्रोत्साहन की गतिविधियाँ, उनके प्रति व्यवहार, उनका मूल्याकंन, प्रबंधन का उनके प्रति सकारात्मक व्यवहार होना आवश्यक है ताकि वह अधिक कार्य संतुष्ट होकर अपनी भूमिका प्रभावी ढंग से निवर्हन कर सकें।

शैक्षिक निहितार्थ

शैक्षिक दृष्टि से इस शोध पत्र में उठाई गई समस्या महत्वपूर्ण है। आज यह आवश्यक है कि शिक्षकों के कृत्य संतोष का विभिन्न पहलुओं से अध्ययन किया जाए, क्योंकि शिक्षक यदि अपने कृत्य से संतुष्ट है तो वह विद्यालय में अपनी भूमिका का प्रभावी निष्पादन करने में सक्षम होगा। शिक्षक का अपने सहयोगियों के साथ व्यवहार, विद्यालय का वातावरण व भाषा संप्रेषण उनके कृत्य संतोष व भूमिका प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं। अध्ययन में यह पाया गया है कि कार्य संतुष्टि व भूमिका प्रभावशीलता धनात्मक रूप से

सह-संबंधित है अर्थात् अधिक संतुष्ट शिक्षकों की भूमिका प्रभावशीलता अधिक है। इस निष्कर्ष से निजी विद्यालय के प्रबंधकों को एवं सरकार के उच्च अधिकारियों को स्पष्ट रूप से यह संकेत मिलता है कि यदि एक शिक्षक विद्यालय में संतुष्ट है तो विद्यालय में उसकी भूमिका सकारात्मक होगी। अत: विद्यालय में शिक्षकों के तनाव एवं कुंठा को दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए। शिक्षक की भूमिका शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करती है। अत: शिक्षक की कार्यशैली, उनका कक्षा-कक्ष व्यवहार व विद्यालय में सहयोगियों के साथ सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देने का प्रयास किया जाना चाहिए। अत: निष्कर्ष के आधार पर प्रत्येक शिक्षक कृत्य संतोषी होना चाहिए तभी राष्ट्र अपेक्षित उन्नति कर सकेगा।

निष्कर्ष

इस शोध में यह पाया गया कि गैर-सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की भूमिका प्रभावशीलता सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों से अधिक व सार्थक है। महिला शिक्षक, पुरुष शिक्षकों की तुलना में अधिक कार्य संतुष्ट व अपनी भूमिका को प्रभावी ढंग से निर्वहन करने में सक्षम हैं। साथ ही, अध्ययन में यह भी पाया गया कि सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालय के शिक्षक अपने कृत्य संतोष में सामान्य स्तर रखते हैं। अधिक अनुभवी शिक्षकों की भूमिका प्रभावशीलता अधिक व कम अनुभवी शिक्षक कम कृत्य संतोषी पाए गए हैं। भाषा अध्ययन के अंतर्गत हिंदी भाषा शिक्षण करने वाले शिक्षकों का अपने समकक्ष अंग्रेज़ी भाषा शिक्षकों से कार्य संतुष्टि व भूमिका प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। कार्य संतुष्टि व भूमिका प्रभावशीलता धनात्मक रूप में सह-संबंधित हैं। चूँकि कार्य संतुष्टि शिक्षक के मनोवैज्ञानिक व भौतिक पक्ष को प्रभावित करती है। अत: इसे एक विषय के रूप में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में सम्मिलत किया जा सकता है।

संदर्भ

अलका और एम. अस्थाना. 2004. टीचर्स जॉब सटिस्फ़ैक्शन इन रिलेशन टू देयर ऐज, सेक्स एंड टीचिंग लेवल. *इंडियन साइकोलॉजिकल रिव्यू.* 62(4), पृ. 170–176.

कुमार. पी. और डी. एन. मुथ्था. 1993. *टीचर्स जॉब सटिस्फ़ैक्शन क्वेशनयर*. डिपार्टमेंट ऑफ़ साइकोलॉजी, यूनिवर्सिटी ऑफ़ जोधपुर, जोधपुर.

कौर, बी. 1983. जॉब सटिस्फ़ैक्शन ऑफ़ होम साइंस टीचर्स—इट्स रिलेशनशिप विद पर्सनल, प्रोफ़ेशनल एंड ओर्गनाइज़ेशनल कैरेक्टरिस्टिक. संपादन में बुच, एम. बी. (संपादक). *फ़ोर्थ सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन (1983–1988)*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

खातून, टी. और ज़ेड हसन. 2000. जॉब सेटिस्फ़ैक्शन ऑफ़ सेकंड्री स्कूल टीचर्स इन रीलेशन टू देयर पर्सनल वैरिएबल्स—सेक्स, एक्सपीरियंस, प्रोफ़ेशनल ट्रेनिंग, सैलरी, एंड रीलिजन. *इंडियन एजुकेशनल रीव्यू.* जनवरी, वॉल्यूम 36 (1).

गुप्ता, मधु , पसरीजा, पूजा और के. के. बंसल. 2012. जॉब सटिस्फ़ैक्शन ऑफ़ सेकंडरी स्कूल टीचर्स इन रिलेशन टू सम डेमोग्राफ़िक वेरिएबल— ए कम्पेरेटिव स्टडी. *जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड रिसर्च फ़ॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट*. 1(1), पृ. 8–9.

गुप्ता, मधु, और रचना जैन. 2003. जॉब सटिस्फ़ैक्शन ऑफ़ नर्सरी स्कूल टीचर्स वर्किंग इन दिल्ली. *इंडियन साइकोलॉजिकल रिव्यू*. 61, पृ. 49–86.

पटनायक, एसपी और आलोक शर्मा. 2003. ए स्टडी ऑफ़ ऑर्गनाइज़ेशनल हेल्थ एंड रोल एफ़ीशिएंसी ऑफ़ डाइट्स. *इंडियन जर्नल ऑफ़ ट्रेनिंग एंड डेवलपमेंट*. 33.

पटनायक, एस. पी. और के. सी. पंडा. 1982. पर्सनालिटी एंड ऐटिट्यूड पैटर्स ऑफ़ गुड एंड पुअर टीचर्स वर्किंग इन सेकंडरी स्कूल्ज़. *जर्नल ऑफ़ एजुकेशन एंड साइकोलॉजी*. 39(4), पृ. 232–240.

पांडेय, पी. 2016, ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ जॉब सेटिस्फ़ैक्शन ऑफ़ गवर्मेंट एंड प्राइवेट स्कूल टीचर्स. *जर्नल ऑफ़ टीचर एजुकेशन एंड रिसर्च*. वॉल्यूम 2 (1).

पाथेय, एस और एस. चौधरी. 2000. रोल एफ़िशिएंसी डाइमेंशंस एज़ कोरेलेट्स ऑफ़ ऑक्यूपेशनल सेल्फ़ एफ़िकेसी एंड लर्नड हेल्पलिनेस. *इंडियन जर्नल ऑफ़ इंडस्ट्रियल रिलेशन्स*. 35(4), पृ. 507–548.

पारीक, यू. 1998. *मेकिंग ओर्गनाइज़ेशनल रोल इफ़ेक्टिव*. टाटा मैक्ग्रॉ हिल पब्लिशिंग कम्पनी, नयी दिल्ली.

भट्ट, डी. जे. 1997. जॉब स्ट्रेस, जॉब इन्वॉल्वमेंट एंड जॉब सटिस्फ़ैक्शन ऑफ़ टीचर्स— ए कोरेलेशन स्टडी. *इंडियन जर्नल ऑफ़ साइकोमेट्री एंड एजुकेशन*. 28(2), पृ. 87–94.

रामा, एम. बी. वी. 2000. रिलेशनशिप बिटवीन जॉब सटिस्फ़ैक्शन एंड लाइफ़ सटिस्फ़ैक्शन अमंग सेकंडरी स्कूल टीचर्स. *जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च एंड एक्सटेंशन*. 37(2), पृ. 47–84.

लाहिरी, एस और डी. आर. सक्सेना. 2003. रिलेशनशिप ऑफ़ पर्सनालिटी एंड पर्सनल फ़ैक्टर्स विद जॉब सटिस्फ़ैक्शन ऑफ़ प्राइमरी टीचर्स. द *प्राइमरी टीचर*. 28(3), पृ. 58–66. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

शर्मा, आलोक. 2001. *एन एनालिटिकल स्टडी ऑफ़ ओर्गनाइज़ेशनल हेल्थ ऑफ़ डाइट्स एंड रोल एफ़िशिएंसी ऑफ़ देयर फ़ैकल्टीज़*. अप्रकाशित मास्टर्स डेसर्टेशन. रीजनल कॉलेज इंस्टिट्यूट ऑफ़ एजुकेशन, भोपाल.

श्रीदेवी. 2011. *मैसूर विश्वविद्यालय के प्रशिक्षिकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन*. पी.एच.डी. एजुकेशन, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर.

श्रीवास्तव, एस. 1985. ए स्टडी ऑफ़ जॉब सटिस्फ़ैक्शन एंड प्रोफ़ेशनल ऑनेस्टी ऑफ़ प्राइमरी स्कूल टीचर्स विद नेसेसरी सजेशन. संपादन में बुच, ऍम. बी. (संपादक). *फ़ोर्थ सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन (1983–1988)*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.

सावले, एल. 2000. *ए स्टडी ऑफ़ चेंज प्रोनेनेस्स एंड रोल एफ़िशिएंसी ऑफ़ प्राइमरी स्कूल टीचर्स*. अप्रकाशित मास्टर्स डेसर्टेशन. रीजनल कॉलेज इंस्टिट्यूट ऑफ़ एजुकेशन, भोपाल.

सिंह, जी. 2007. जॉब सटिस्फ़ैक्शन ऑफ़ टीचर एजुकेटर्स इन रिलेशन टू देयर ऐटिट्यूड टुवर्ड्स टीचिंग. *जर्नल ऑफ़ ऑल इंडिया एसोसिएशन फ़ॉर एजुकेशनल रिसर्च*. 19(3-4), पृ. 86–87.

सिंह, पी. और एम. मोहंती. 1996. रोल एफ़िकेसी इन रिलेशन टू जॉब एंज़ायटी एंड जॉब स्टेट्स. *साइको-लिंग्वा*. 26(1), पृ. 25–28.

सिन्हा, वी. 1980. द इम्पैक्ट ऑफ़ टीचर एजुकेशन प्रोग्राम ऑन द प्रोफ़ेशनल एफ़िशिएंसी ऑफ़ द टीचर. पी.एच. डी. एजुकेशन, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी. संपादन में बुच, ऍम. बी. (संपादक). *थर्ड सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजुकेशन*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली.